



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 634]
No. 634]

नई दिल्ली, बुधस्वतिवार, जुलाई 17, 2003/आषाढ़ 26, 1925
NEW DELHI, THURSDAY, JULY 17, 2003/ASADHA 26, 1925

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
अधिसूचना

मुम्बई, 17 जुलाई, 2003

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (प्रतिभूति बाजार से संबंधित कपटपूर्ण और अशुद्ध व्यापारिक
व्यवहारों का प्रतिषेध) विनियम, 2003

का.आ. 816(अ).— बोर्ड, भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15)
की धारा 30 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा निम्नलिखित विनियम बनाता है,
अर्थात् :-

अध्याय I

प्रारम्भिक

संक्षिप्त नाम और प्रारंभ

1. (1)

इन विनियमों को भारतीय प्रतिभूति और
विनियम बोर्ड (प्रतिभूति बाजार से संबंधित
कपटपूर्ण और अशुद्ध व्यापारिक व्यवहारों का

प्रतिषेध) विनियम, 2003 कहा जा सकेगा ।

- (2) वे राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे ।

परिभाषाएँ

2. (1) इन विनियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, -

(क) "अधिनियम" से भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) अभिप्रेत है ;

(ख) "प्रतिभूतियों में व्यापार" में किसी प्रतिभूति के किसी निर्गम के अनुसरण में क्रय करना, विक्रय करना या अभिदान करना अथवा किसी प्रतिभूति के किसी निर्गम के प्रति क्रय, विक्रय या अभिदान करने के लिए सहमत होना अथवा अधिनियम की धारा 12 में निर्दिष्ट प्रधान, अभिकर्ता या मध्यवर्ती के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा किसी प्रतिभूति में किसी रीति में अन्यथा संव्यवहार करना सम्मिलित है ;

(ग) "कपट" में कोई कृत्य, अभिव्यक्ति, लोप या छिपाया जाना चाहे प्रवचनापूर्ण रीति में अथवा व्यक्ति द्वारा या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उसकी मौनानुकूलता से या उसके अभिकर्ता द्वारा प्रतिभूतियों में व्यौहार करते समय प्रतिभूतियों में व्यौहार करने के लिए एक अन्य व्यक्ति या उसके अभिकर्ता को उत्प्रेरित करने के लिए किया गया हो, चाहे कोई सदोष अभिलाभ अथवा किसी हानि से बचाव हुआ हो या न हुआ हो सम्मिलित है, और इसमें -

- 1) सत्यता के दुर्व्यपदेशन या तात्त्विक तथ्य के छिपाव को जानना इसलिए कि एक अन्य व्यक्ति उसके अहित में कार्य कर सके ,
- 2) तथ्य के विषय में सुझाव जो सत्य नहीं है ऐसे व्यक्ति द्वारा जो इसे सत्य मानने का विश्वास नहीं करता है ;
- 3) व्यक्ति जिसे तथ्य का ज्ञान था विश्वास हो द्वारा तथ्य का सक्रिय छिपाया जाना ;

- 4) पालन करने के किसी आशय के बिना ही दिया गया वचन ;
- 5) बिना सोचे विचारे और असावधानी रीति से किया गया अभ्यावेदन चाहे यह सत्य हो या मिथ्या हो ;
- 6) कोई ऐसा कृत्य या लोप जिसे कोई अन्य विधि विनिर्दिष्ट रूप से कपटपूर्ण घोषित करती हो ;
- 7) व्यक्ति द्वारा प्रवंचक आचरण एक अन्य को सूचित सम्मति या पूर्ण सहभागिता से वंचित करते हुए ;
- 8) युक्तियुक्त आधार के बिना किया गया मिथ्या कथन जिससे इसकी सत्यता पर विश्वास हो सके ;
- 9) गलत जानकारी देते हुए प्रतिभूतियों के निर्गमकर्ता का कृत्य जो प्रतिभूति की बाजार कीमत को प्रभावित करता हो, परिणामस्वरूप विनिधानकर्ता प्रभावी रूप से भ्रमित होते हों

हालाँकि वे कथन पर ही या बाजार कीमत से
भिन्न इससे व्युत्पन्न किसी भी बात पर निर्भर
नहीं हुए थे

भी सम्मिलित होगा ।

और "कपटपूर्ण" का अर्थ तदनुसार लगाया
जायेगा ;

इस खंड में अंतर्विष्ट कोई भी बात -

(क) सरकार की आर्थिक नीति

(ख) देश की आर्थिक स्थिति

(ग) प्रतिभूति बाजार के रुख या

(घ) वैसी ही प्रकृति के किसी अन्य मामले

के विषय में सद्भावपूर्वक की गयी किन्हीं
साधारण टिप्पणियों पर लागू नहीं होगी, चाहे
ऐसी टिप्पणियाँ जनता में या एकांत में की

जाती हों ।

(घ) "अन्वेषक प्राधिकारी" से बोर्ड का कोई अधिकारी अभिप्रेत है जो प्रभाग मुख्य की पंक्ति से नीचे का न हो, अधिनियम की धारा 11 ग के अधीन अन्वेषण करने के लिए बोर्ड द्वारा प्राधिकृत ;

(ङ) 'प्रतिभूतियाँ' से प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 (1956 का 42) की धारा 2 में यथा परिभाषित प्रतिभूतियाँ अभिप्रेत हैं ।

(2) इन विनियमों में उपयोग किये गये और अपरिभाषित शब्दों और पदों, किंतु अधिनियम में अथवा उसके अधीन बनाये गये नियमों या विनियमों में परिभाषित, के अर्थ अधिनियम अथवा, यथास्थिति, उसके अधीन बनाये गये नियमों या विनियमों में क्रमशः जो उनके लिए नियत हैं होंगे ।

अध्याय II

प्रतिभूति बाजार से संबंधित कपटपूर्ण और अक्रहजु व्यापारिक व्यवहारों का प्रतिषेध

प्रतिभूतियों में कतिपय
व्यौहारों का प्रतिषेध

3.

कोई व्यक्ति प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः -

(क) कपटपूर्ण रीति से प्रतिभूतियों में क्रय, विक्रय
या अन्यथा व्यौहार नहीं करेगा ;

(ख) उपयोग नहीं करेगा या नहीं लगायेगा,
मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध या
सूचीबद्ध किये जाने के लिए प्रस्तावित किसी
प्रतिभूति के निर्गम, क्रय या विक्रय के संबंध
में, अधिनियम अथवा उसके अधीन बनाये
गये नियमों या विनियमों के उपबंधों के
उल्लंघन में कोई छलसाधक या प्रवंचक
युक्ति या प्रयुक्ति ;

(ग) प्रतिभूतियों जो मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज
में सूचीबद्ध हैं या सूचीबद्ध किये जाने के
लिए प्रस्तावित हैं में व्यौहार या के निर्गम के
संबंध में कोई युक्ति, स्कीम नहीं लगायेगा
या धोखा देने का प्रयत्न नहीं करेगा ;

- (घ) किसी कृत्य, व्यवहार, कारबार के अनुक्रम में नहीं लगेगा जिससे अधिनियम अथवा उसके अधीन बनाये गये नियमों और विनियमों के उपबंधों के उल्लंघन में प्रतिभूतियों जो मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हैं या सूचीबद्ध किये जाने के लिए प्रस्तावित हैं में किसी व्यौहार या के निर्गम के संबंध में किसी व्यक्ति पर कपट या प्रवंचना होती है या हो जायेगी ।

छलसाधक, कपटपूर्ण और
अऋजु व्यापारिक व्यवहारों
का प्रतिषेध

4. (1) विनियम 3 के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, कोई व्यक्ति प्रतिभूतियों में कपटपूर्ण या अऋजु व्यापारिक व्यवहार में लिप्त नहीं होगा ।
- (2) प्रतिभूतियों में व्यौहार कपटपूर्ण या अऋजु व्यापारिक व्यवहार समझा जायेगा यदि यह कपट में अंतर्वलित होता है और इसके अंतर्गत निम्नलिखित में से समस्त या कोई हो सकेगा, अर्थात् :-

- (क) ऐसे कृत्य में लिप्त रहना जिससे प्रतिभूति

बाजार में व्यापार का मिथ्या या भ्रामक रूप
सृजित होता है ;

- (ख) प्रतिभूति में व्यौहार जो हिताधिकारी स्वामित्व
का अंतरण कराने के लिए आशयित न हो
किंतु सदोष अभिलाष या हानि से बचाव के
लिए ऐसी प्रतिभूति की कीमत में वृद्धि करने,
कमी करने या उतार-चढ़ाव करने की युक्ति
के रूप में ही प्रवर्तित होने के लिए आशयित
हो ;
- (ग) किसी व्यक्ति को किसी धन का अग्रिम देना
या अग्रिम देने के लिए सहमत होना तद्द्वारा
किसी व्यक्ति को केवल ऐसे निर्गम में
न्यूनतम अभिदान को प्रतिभूत करने के
आशय से ही किसी निर्गम में किसी प्रतिभूति
को क्रय करने का प्रस्ताव करने के लिए
उत्प्रेरित करना ;
- (घ) अदा करना, प्रस्ताव करना अथवा अदा करने
या प्रस्ताव करने के लिए सहमत होना,
प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः, किसी व्यक्ति को
किसी धन या धन का मूल्य ऐसे व्यक्ति को

ऐसी प्रतिभूति की कीमत में वृद्धि करने, कमी करने, बनाये रखने या उतार-चढ़ाव कराने के उद्देश्य से किसी प्रतिभूति में व्यौहार करने के लिए उत्प्रेरित करने के लिए ;

(ड) प्रतिभूति की कीमत के छलसाधन की कोटि में आने वाला कोई कृत्य या लोप ;

(च) प्रतिभूतियों में व्यौहार करने वाले व्यक्ति द्वारा कोई जानकारी जो सत्य नहीं है या जिम्मे पर वह विश्वास नहीं करता है कि वह सत्य है प्रतिभूतियों में व्यौहार के पूर्व या के दौरान प्रकाशित करना या प्रकाशित कराना अथवा की रिपोर्ट करना या रिपोर्ट कराना ;

(छ) प्रतिभूतियों में संव्यवहार करना इसे पूरा करने के आशय के बिना अथवा ऐसी प्रतिभूति के स्वामित्व के परिवर्तन के आशय के बिना ;

(ज) चुराई हुई या कूटकृत प्रतिभूति का विक्रय करना, व्यौहार करना या गिरवी रखना चाहे भौतिक या अभौतिकीकृत रूप में ;

- (झ) मध्यवर्ती का ग्राहक को प्रतिभूति का क्रय करने या विक्रय करने की बाबत कतिपय कीमत का वचन देना और ऐसी प्रतिभूति की कीमत में फर्क पैदा होने तक प्रतीक्षा करना और कीमतों में अंतर को अपने स्वयं के लिए लाभ के रूप में प्रतिधारित करना ;
- (ञ) मध्यवर्ती का उसके ग्राहकों को प्रतिभूति से संबंधित ऐसी जानकारी उपलब्ध कराना जो ग्राहकों द्वारा ऐसी प्रतिभूति में उनके व्यवहार के पूर्व सत्यापित नहीं की जा सकती है ;
- (ट) विज्ञापन जो भ्रामक है या जिसमें विकृत प्रकार की जानकारी अंतर्विष्ट है और जो विनिधानकर्ताओं के विनिश्चय पर असर डाल सकेगा ;
- (ठ) मध्यवर्ती का उसके ग्राहकों को उसकी कमीशन और दलाली बढ़ाने के लिए वर्धित रीति में उनकी ओर से किये गये व्यापार संव्यवहारों की रिपोर्ट करना ;
- (ड) मध्यवर्ती का उसके ग्राहक को उसकी ओर से

किये संव्यवहारों को प्रकट न करना जिसमें विकल्प स्थिति लेना सम्मिलित है ;

- (ढ) मध्यवर्तियों के बीच प्रतिभूति की बाबत किये गये चक्रीय संव्यवहार ऐसी प्रतिभूति में व्यापार के मिथ्या रूप की व्यवस्था करने के लिए कमीशन बढ़ाने अथवा ऐसी प्रतिभूति की कीमत में वृद्धि करने, कमी करने या उतार-चढ़ाव कराने के लिए ;
- (ण) मध्यवर्ती द्वारा ग्राहकों को केवल उसकी दलाली या कमीशन बढ़ाने के उद्देश्य से ही प्रतिभूतियों में व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित करना ;
- (त) मध्यवर्ती का संविदा नोटों जैसे अभिलेखों पर पूर्व तारीख डालना या अन्यथा का मिथ्याकरण ;
- (थ) मध्यवर्ती का पर्याप्त ग्राहक आदेश के पहले ही से प्रतिभूतियों का क्रय करना या विक्रय करना अथवा जिसके द्वारा फ्यूचर्स या विकल्प स्थिति उसी या संबंधित फ्यूचर्स या विकल्प

संविदा में आसन्न संव्यवहार के बारे में ली जाती है ;

- (द) मिथ्या या भ्रामक समाचार निर्मित करना जो प्रतिभूतियों के विक्रय या क्रय को उत्प्रेरित कर सकेगा ।

अध्याय III

अन्वेषण

अन्वेषण का आदेश देने की
बोर्ड की शक्ति 5.

जहाँ बोर्ड, अध्यक्ष, सदस्य या कार्यपालक निदेशक (इसमें इसके पश्चात् "नियुक्ति प्राधिकारी" के रूप में निर्दिष्ट) के पास यह विश्वास करने का युक्तियुक्त आधार है कि -

- (क) प्रतिभूतियों में संव्यवहारों का व्यापार इन विनियमों के अतिक्रमण में विनिधानकर्ताओं या प्रतिभूति बाजार के लिए अहितकर रीति में किया जा रहा है ;

- (ख) किसी मध्यवर्ती या प्रतिभूति बाजार से सहयुक्त किसी व्यक्ति ने अधिनियम अथवा नियमों या विनियमों के उपबंधों में से किसी का अतिक्रमण किया है,

यह, किसी भी समय लिखित आदेश द्वारा, आदेश में विनिर्दिष्ट किसी अधिकारी को जो प्रभाग मुख्य (इसमें इसके पश्चात् "अन्वेषक प्राधिकारी" के रूप में निर्दिष्ट) की पंक्ति से

नीचे का न हो को मध्यवर्ती या प्रतिभूति बाजार से सहयुक्त व्यक्तियों या किसी अन्य व्यक्ति के कामकाज का अन्वेषण करने और उस पर बोर्ड को रिपोर्ट करने का निदेश दे सकेगा अधिनियम की धारा 11 ग में उपबंधित रीति में ।

अन्वेषक प्राधिकारी की शक्तियाँ

6.

अधिनियम के अधीन प्रदत्त शक्तियों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, अन्वेषक प्राधिकारी के पास अन्वेषण के संचालन के लिए निम्नलिखित शक्तियाँ होंगी, अर्थात् :-

- (1) अधिनियम की धारा 11(2)(i) में विनिर्दिष्ट किसी व्यक्ति से जानकारी या अभिलेख मंगाने की ;
- (2) किसी सूचीबद्ध सार्वजनिक कंपनी या सार्वजनिक कंपनी (जो अधिनियम की धारा 12 में निर्दिष्ट मध्यवर्ती न हो) जो इसकी प्रतिभूतियों को किसी मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध कराने का आशय रखती है की किसी बही, या रजिस्टर, अथवा अन्य दस्तावेज या अभिलेख का निरीक्षण

करने की जहाँ अन्वेषक प्राधिकारी के पास यह विश्वास करने के युक्तियुक्त आधार हों कि ऐसी कंपनी इन विनियमों के अतिक्रमण में संचालन करती आ रही है ;

- (3) किसी मध्यवर्ती या प्रतिभूति बाजार से किसी रीति में सहयुक्त किसी व्यक्ति से उसके या इस निमित्त उसके द्वारा प्राधिकृत किसी व्यक्ति के समक्ष ऐसी जानकारी देने, अथवा ऐसी बहियाँ, या रजिस्टर, या अन्य दस्तावेज या अभिलेख पेश करने की अपेक्षा करने की जो वह आवश्यक माने यदि ऐसी जानकारी को देना अथवा ऐसी बहियों, या रजिस्ट्रों, या अन्य दस्तावेजों, या अभिलेख का पेश करना अन्वेषण के प्रयोजनों के लिए सुसंगत या आवश्यक है ;

- (4) एक मास की अधिकतम कालावधि जो बोर्ड द्वारा छह मास की कालावधि तक बढ़ायी जा सकेगी के लिए इस विनियम के अधीन पेश की गई किन्हीं बहियों, रजिस्ट्रों, अन्य दस्तावेजों और अभिलेख को उसकी अभिरक्षा में रखने की :

परंतु यह कि अन्वेषक प्राधिकारी कोई बही, रजिस्टर, अन्य दस्तावेज या अभिलेख मंगा सकेगा यदि इसकी पुनः आवश्यकता हो :

परंतु यह और कि यदि व्यक्ति जिसकी ओर से बहियाँ, रजिस्टर, अन्य दस्तावेज और अभिलेख पेश किये जाते हैं अन्वेषक प्राधिकारी के समक्ष पेश की गई बहियों, रजिस्ट्रों, अन्य दस्तावेजों और अभिलेख की प्रमाणित प्रतियों की अपेक्षा करता है, तो वह ऐसे व्यक्ति या जिसकी ओर से बहियाँ, रजिस्टर, अन्य दस्तावेज और अभिलेख पेश किये गये थे को ऐसी बहियों, रजिस्ट्रों, अन्य दस्तावेजों और अभिलेख की प्रमाणित प्रतियाँ देगा ;

- (5) संबद्ध व्यक्ति अथवा ऐसे व्यक्ति के किसी निदेशक, भागीदार, सदस्य या कर्मचारी की मौखिक रूप से परीक्षा करने की और का कथन अभिलिखित करने की और ऐसे व्यक्ति के खिलाफ साक्ष्य के रूप में उपयोग किये जाने वाले ऐसी मौखिक परीक्षा के

टिप्पण लेने की :

परंतु यह कि उक्त टिप्पण, इस प्रकार परीक्षित व्यक्ति, को पढ़ाये, या द्वारा पढ़े जायेंगे और द्वारा हस्ताक्षरित होंगे ;

- (6) किसी मध्यवर्ती या प्रतिभूति बाजार से किसी रीति में सहयुक्त किसी व्यक्ति के किसी प्रबंधक, प्रबंध निदेशक, अधिकारी या अन्य कर्मचारी की उसके कारबार के कामकाज के संबंध में शपथ पर परीक्षा करने की और तदनुसार शपथ दिलायी जा सकेगी और उस प्रयोजन के लिए उन व्यक्तियों में से किसी को उसके समक्ष वैयक्तिक रूप से हाजिर होने की अपेक्षा की जा सकेगी ।

पूर्विक अनुमोदन से प्रयोग
की जाने वाली अन्वेषक
प्राधिकारी की शक्ति

7.

अन्वेषक प्राधिकारी, अध्यक्ष या सदस्य से विनिर्दिष्ट अनुमोदन अभिप्राप्त करने के पश्चात् निम्नलिखित शक्तियों में से समस्त या किसी का प्रयोग भी कर सकेगा, अर्थात्:-

- (क) प्रतिभूतियों में किसी संव्यवहार जो अन्वेषणाधीन हैं की बाबत किसी केंद्रीय,

राज्य या प्रांतीय अधिनियम द्वारा या के अधीन स्थापित या गठित किसी बैंक या किसी अन्य प्राधिकरण या बोर्ड या निगम से जानकारी और अभिलेख मंगाने की ;

(ख) किन्हीं बहियों, रजिस्ट्रों, अन्य दस्तावेजों और अभिलेख के अभिग्रहण के लिए आदेश देने के लिए अधिकारिता वाले प्रथम वर्ग न्यायिक मजिस्ट्रेट को आवेदन करने की, यदि अन्वेषण के दौरान, अन्वेषक प्राधिकारी के पास यह विश्वास करने का युक्तियुक्त आधार हो कि किसी मध्यवर्ती या प्रतिभूति बाजार से किसी रीति में सहयुक्त किसी व्यक्ति की, या से संबंधित, ऐसी बहियों, रजिस्ट्रों, अन्य दस्तावेजों और अभिलेख को नष्ट किया, विकृत किया, परिवर्तित किया, मिथ्याकृत किया या छिपाया जा सकेगा ;

(ग) ऐसी कालावधि जो अन्वेषण की समाप्ति से अपश्चात् हो के लिए इन विनियमों के अधीन अभिग्रहण की गयी बहियों, रजिस्ट्रों, अन्य दस्तावेजों और अभिलेख को उसकी अभिरक्षा में रखने की जो वह आवश्यक माने और

तत्पश्चात् उसे व्यक्ति, कंपनी या अन्य निगमित निकाय को, या, यथास्थिति, प्रबंध निदेशक या प्रबंधक या किसी अन्य व्यक्ति जिसकी अभिरक्षा या शक्ति से उनका अभिग्रहण किया गया था को लौटाने की :

परंतु यह कि अन्वेषक प्राधिकारी, यथा पूर्वोक्त ऐसी बहियों, रजिस्ट्रों, अन्य दस्तावेजों और अभिलेख को लौटाने से पूर्व, उन या उनके किसी भाग पर पहचान चिह्न लगा सकेंगे ;

- (घ) इस विनियम में अन्यथा उपबंधित के सिवाय, इस विनियम के अधीन की गयी प्रत्येक तलाशी या अभिग्रहण दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (1974 का 2) के उपबंधों के अनुसार किये जायेंगे उस संहिता के अधीन की गयी तलाशियों या अभिग्रहणों से संबंधित ।

सहयोग करने का कर्तव्य,
आदि

8. (1)

प्रत्येक व्यक्ति जिसकी बाबत अन्वेषण का आदेश विनियम 7 के अधीन दिया गया है का कर्तव्य होगा -

- (क) अन्वेषक प्राधिकारी या उसके द्वारा किसी प्राधिकृत व्यक्ति को उसकी अभिरक्षा या नियंत्रण में रखी ऐसी बहियाँ, लेखे और अन्य दस्तावेज तथा अभिलेख पेश करना और ऐसे विवरण और जानकारी देना जैसी अन्वेषक प्राधिकारी या उसके द्वारा इस प्रकार प्राधिकृत व्यक्ति अन्वेषण के प्रयोजनों के लिए युक्तियुक्त रूप से अपेक्षा करे ;
- (ख) अन्वेषण प्राधिकारी के समक्ष वैयक्तिक रूप से हाजिर होना जब उसके द्वारा ऐसा करना विनियम 6 या विनियम 7 के अधीन अपेक्षित हो किसी प्रश्न का उत्तर देना जो उससे अन्वेषण प्राधिकारी द्वारा उक्त विनियमों के अधीन शक्तियों के अनुसरण में किया जाता है ।
- (2) कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 235 से 241 के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, प्रत्येक प्रबंधक, प्रबंध निदेशक, अधिकारी और कंपनी के अन्य कर्मचारी और प्रत्येक मध्यवर्ती अधिनियम की धारा 12 में निर्दिष्ट या

प्रतिभूति बाजार से सहयुक्त प्रत्येक मध्यवर्ती का कर्तव्य अन्वेषक प्राधिकारी या उसके द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति को, कंपनी के, या से संबंधित, या यथास्थिति, मध्यवर्ती या ऐसे व्यक्ति, जो उनकी अभिरक्षा या शक्ति रखते हैं, के या से संबंधित, समस्त बहियों, रजिस्ट्रों, अन्य दस्तावेजों और अभिलेख को परिरक्षित रखना और पेश करना होगा।

(3) उप-विनियम (1) और (2) के उपबंधों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, ऐसा व्यक्ति -

(क) अन्वेषक प्राधिकारी को अन्वेषण के प्रयोजन के लिए सभी युक्तियुक्त समयों पर ऐसे व्यक्ति द्वारा अधिभोगित परिसरों तक पहुंच रखना अनुज्ञात करेगा ;

(ख) अन्वेषक प्राधिकारी को अन्वेषण के प्रयोजनों के लिए युक्तियुक्त रूप से अपेक्षित उसकी अभिरक्षा या नियंत्रण में रखी (चाहे भौतिक रूप में या कंप्यूटर में या किसी अन्य रूप में

रखी गयी हों) किन्हीं बहियों, लेखाओं और अन्य दस्तावेजों की परीक्षा करने के लिए युक्तियुक्त सुविधाएँ देगा ;

- (ग) ऐसे अन्वेषक प्राधिकारी को कोई ऐसी बहियाँ, लेखे और अभिलेख उपलब्ध करायेगा जो, अन्वेषक प्राधिकारी की राय में, अन्वेषण से सुसंगत हैं या, यथास्थिति, उसे उनके कंप्यूटर प्रिंट लेने के लिए अनुज्ञात करेगा ।

बोर्ड को रिपोर्ट प्रस्तुत करना 9.

अन्वेषक प्राधिकारी, अन्वेषण के पूरा हो जाने पर, समस्त सुसंगत तथ्यों पर विचार करने के पश्चात्, नियुक्ति प्राधिकारी को रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा :

परंतु यह कि अन्वेषक प्राधिकारी अन्वेषणों के पूरा होने तक अंतरिम रिपोर्ट प्रस्तुत कर सकेगा यदि वह विनिधानकर्ताओं और प्रतिभूति बाजार के हित में आवश्यक माने या जैसा नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा निदेश दिया जाये ।

बोर्ड द्वारा प्रवर्तन

10.

बोर्ड, विनियम 9 में निर्दिष्ट रिपोर्ट का विचार करने के पश्चात्, यदि समाधान हो जाता है कि इन विनियमों का अतिक्रमण हुआ है और संबद्ध व्यक्तियों को सुनवाई का उचित अवसर देने के पश्चात्, ऐसे निदेश जारी या ऐसी कार्रवाई कर सकेगा जैसा विनियम 11 और विनियम 12 में उल्लिखित है :

परंतु यह कि बोर्ड, विनिधानकर्ताओं और प्रतिभूति बाजार के हित में, विनियम 9 में निर्दिष्ट अन्वेषक प्राधिकारी की रिपोर्ट की प्राप्ति होने तक, विनियम 11 के अधीन निदेश जारी कर सकेगा :

परंतु यह और कि बोर्ड, विनिधानकर्ताओं और प्रतिभूति बाजार के हित में, लिखित रूप में कारणों को अभिलिखित करते हुए पूर्व-विनिश्चयक सुनवाई के अवसर से अभिमुक्ति दे सकेगा और संबद्ध व्यक्तियों को पश्च-विनिश्चयक सुनवाई का अवसर यथासंभव शीघ्रता के साथ देगा ।

11. (1) बोर्ड, अधिनियम की धारा 11 की उप-धारा (1), (2), (2क) तथा (3) और धारा 11(ख) में अंतर्विष्ट उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, आदेश द्वारा, ऐसे कारणों से जो लिखित रूप में अभिलिखित किये जायेंगे, विनिधानकर्ताओं और प्रतिभूति बाजार के हितों में, निम्नलिखित निदेशों या कार्रवाइयों में से कोई जारी या कर सकेगा, या तो अन्वेषण या जाँच होने तक अथवा ऐसे अन्वेषण या जाँच के पूरा होने पर, अर्थात् :-

(क) मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में कपटपूर्ण और अशुद्ध व्यापारिक व्यवहार में अंतर्वलित पायी जाने वाली या प्रथमदृष्ट्या पायी जाने वाली प्रतिभूति के व्यापार को निलंबित करना;

(ख) व्यक्तियों को प्रतिभूति बाजार में पहुंच रखने से अवरुद्ध करना और प्रतिभूति बाजार से सहयुक्त किसी व्यक्ति को प्रतिभूतियों में

क्रय, विक्रय या व्यौहार करने से प्रतिषिद्ध करना ;

(ग) किसी स्टॉक एक्सचेंज या स्व-विनियामक संगठन के किसी पदाधिकारी को ऐसा पद धारण करने से निलंबित करना ;

(घ) किसी संव्यवहार की बाबत आगमों या प्रतिभूतियों को परिबद्ध करना और प्रतिधारित करना जो इन विनियमों के अतिक्रमण में या प्रथमदृष्ट्या अतिक्रमण में है ;

(ङ) किसी मध्यवर्ती या प्रतिभूति बाजार से किसी रीति में सहयुक्त किसी व्यक्ति को कपटपूर्ण और अऋजु संव्यवहार की भागरूप आस्ति का व्ययन या अन्यसंक्रामण न करने का निदेश देना ;

(च) संबद्ध व्यक्ति से अपेक्षा करना इसके अधिकारियों, अन्य कर्मचारियों या प्रतिनिधियों में से किसी से किसी विशिष्ट रीति से प्रतिभूतियों में व्यौहार करने से विरत रहने की अपेक्षा करने के लिए ;

- (छ) संबद्ध व्यक्ति को इन विनियमों के उल्लंघन में अर्जित प्रतिभूतियों में से किसी का व्ययन करने से प्रतिषिद्ध करना ;
- (ज) संबद्ध व्यक्ति को इन विनियमों के उल्लंघन में अर्जित किन्हीं ऐसी प्रतिभूतियों का व्ययन करने का निदेश देना, ऐसी रीति में जो बोर्ड ठीक समझे, यथापूर्व स्थिति को प्रत्यावर्तित करने के लिए ;
- (2) बोर्ड उप-विनियम (1) के अधीन पारित किसी अंतिम आदेश की बाबत प्रेस प्रकाशनी कम से कम दो समाचारपत्रों में जारी करेगा जिनमें से एक का राष्ट्रव्यापी परिचालन होगा और आदेश को बोर्ड के वेबसाइट पर भी डाला जायेगा ।

रजिस्ट्रीकरण का निलंबन या रद्दकरण 12. (1)

बोर्ड, अधिनियम की धारा 11 की उप-धारा (1), (2), (2क) तथा (3) और धारा 11ख में अंतर्विष्ट उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, आदेश द्वारा, ऐसे कारणों से जो

लिखित रूप में अभिलिखित किये जायेंगे,
विनिधानकर्ताओं और प्रतिभूति बाजार के
हितों में मध्यवर्ती के खिलाफ निम्नलिखित
कार्रवाई कर सकेगा :

- (क) चेतावनी या परिनिंदा जारी करना
- (ख) मध्यवर्ती का रजिस्ट्रीकरण निलंबित करना ;
या
- (ग) मध्यवर्ती का रजिस्ट्रीकरण रद्द करना

परंतु यह कि इन विनियमों के अतिक्रमण के
लिए मध्यवर्ती के निलंबन या रद्दकरण का
कोई अंतिम आदेश पारित नहीं किया जायेगा
जब तक कि भारतीय प्रतिभूति और विनियम
बोर्ड (जांच अधिकारी द्वारा जांच करने और
शास्ति अधिरोपित करने के लिए प्रक्रिया)
विनियम, 2002 के अधीन ऐसे मध्यवर्ती को
लागू विनियमों में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया का
अनुपालन नहीं कर लिया जाता है ।

निरसन और व्यावृत्तियाँ

13. (1)

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(प्रतिभूति बाजार से संबंधित कपटपूर्ण और
अऋजु व्यापारिक व्यवहारों का प्रतिषेध)
विनियम, 1995 को एतद्वारा निरसित किया
जाता है ।

(2)

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(प्रतिभूति बाजार से संबंधित कपटपूर्ण और
अऋजु व्यापारिक व्यवहारों का प्रतिषेध)
विनियम, 1995 के निरसन के होते हुए भी,
भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(प्रतिभूति बाजार से संबंधित कपटपूर्ण और
अऋजु व्यापारिक व्यवहारों का प्रतिषेध)
विनियम, 1995 के विनियम 3, 4, 5 और
6 के किसी अतिक्रमण का अन्वेषण किया
जायेगा और के विरुद्ध इन विनियमों में
अधिकथित प्रक्रिया के अनुसार कार्यवाही की
जायेगी ।

(3)

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड
(प्रतिभूति बाजार से संबंधित कपटपूर्ण और
अऋजु व्यापारिक व्यवहारों का प्रतिषेध)
विनियम, 1995 के निरसन के होते हुए भी,

इन विनियमों के प्रारंभ पर कोई लंबित
अन्वेषण, चलता रहेगा और को इन विनियमों
में अधिकथित प्रक्रिया के अनुसार निपटाया
जायेगा।

[फा. सं. भाप्रविबो/विधि/13678/2003]

ज्ञानेन्द्र नाथ बाजपेयी, अध्यक्ष

पाद टिप्पण

1. भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (प्रतिभूति बाजार से संबंधित कपटपूर्ण और अक्रहज व्यापारिक व्यवहारों का प्रतिषेध) विनियम, 1995, का.आ/एलई/856(ई), 25 अक्टूबर, 1995 को भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ था।

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA NOTIFICATION

Mumbai, the 17th July, 2003

**Securities and Exchange Board of India (Prohibition of Fraudulent and Unfair Trade
Practices relating to Securities Market) Regulations, 2003**

S.O. 816(E).— In exercise of the powers conferred by section 30 of the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992), the Board hereby makes the following regulations, namely:-

CHAPTER I

PRELIMINARY

Short title and commencement

1. (1) These regulations may be called the Securities and Exchange Board of India (Prohibition of Fraudulent and Unfair Trade Practices relating to Securities Markets) Regulations, 2003.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

Definitions

2. (1) In these regulations, unless the context otherwise requires,-

(a) "Act" means the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992);

(b) "dealing in securities" includes an act of buying, selling or subscribing pursuant to any issue of any security or agreeing to buy, sell or subscribe to any issue of any security or otherwise transacting in any way in any security by any person as principal, agent or intermediary referred to in section 12 of the Act.

(c) "fraud" includes any act, expression, omission or concealment committed whether in a deceitful manner or not by a person or by any other person with his connivance or by his agent while dealing in securities in order to induce another person or his agent to deal in securities, whether or not there is any wrongful gain or avoidance of any loss, and shall also include-

- (1) a knowing misrepresentation of the truth or concealment of material fact in order that another person may act to his detriment;
- (2) a suggestion as to a fact which is not true by one who does not believe it to be true;

- (3) an active concealment of a fact by a person having knowledge or belief of the fact;
- (4) a promise made without any intention of performing it;
- (5) a representation made in a reckless and careless manner whether it be true or false;
- (6) any such act or omission as any other law specifically declares to be fraudulent,
- (7) deceptive behaviour by a person depriving another of informed consent or full participation,
- (8) a false statement made without reasonable ground for believing it to be true.
- (9) The act of an issuer of securities giving out misinformation that affects the market price of the security, resulting in investors being effectively misled even though they did not rely on the statement itself or anything derived from it other than the market price.

And "fraudulent" shall be construed accordingly;

Nothing contained in this clause shall apply to any general comments made in good faith in regard to –

- (a) the economic policy of the government

- (b) the economic situation of the country
- (c) trends in the securities market or
- (d) any other matter of a like nature

whether such comments are made in public or in private.

(d) "Investigating Authority" means any officer of the Board not below the rank of Division Chief, authorized by the Board to undertake investigation under Section 11C of the Act;

Z

(e) "securities" means securities as defined in section 2 of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 (42 of 1956).

(2) Words and expressions used and not defined in these regulations, but defined in the Act or in the rules or regulations made thereunder, shall have the meanings respectively assigned to them in the Act or rules or regulations made thereunder, as the case may be.

CHAPTER II

PROHIBITION OF FRAUDULENT AND UNFAIR TRADE PRACTICES RELATING TO THE SECURITIES MARKET

3. Prohibition of certain dealings in securities

No person shall directly or indirectly-

- (a) buy, sell or otherwise deal in securities in a fraudulent manner;
- (b) use or employ, in connection with issue, purchase or sale of any security listed or proposed to be listed in a recognized stock exchange, any manipulative or deceptive device or contrivance in contravention of the provisions of the Act or the rules or the regulations made there under;
- (c) employ any device, scheme or artifice to defraud in connection with dealing in or issue of securities which are listed or proposed to be listed on a recognized stock exchange;
- (d) engage in any act, practice, course of business which operates or would operate as fraud or deceit upon any person in connection with any dealing in or issue of securities which are listed or proposed to be listed on a recognized stock exchange in contravention of the provisions of the Act or the rules and the regulations made there under.

4. Prohibition of manipulative, fraudulent and unfair trade practices

- (1) Without prejudice to the provisions of regulation 3, no person shall indulge in a fraudulent or an unfair trade practice in securities.
- (2) Dealing in securities shall be deemed to be a fraudulent or an unfair trade practice if it involves fraud and may include all or any of the following, namely:-

- (a) indulging in an act which creates false or misleading appearance of trading in the securities market;
- (b) dealing in a security not intended to effect transfer of beneficial ownership but intended to operate only as a device to inflate, depress or cause fluctuations in the price of such security for wrongful gain or avoidance of loss;
- (c) advancing or agreeing to advance any money to any person thereby inducing any other person to offer to buy any security in any issue only with the intention of securing the minimum subscription to such issue;
- (d) paying, offering or agreeing to pay or offer, directly or indirectly, to any person any money or money's worth for inducing such person for dealing in any security with the object of inflating, depressing, maintaining or causing fluctuation in the price of such security;
- (e) any act or omission amounting to manipulation of the price of a security;
- (f) publishing or causing to publish or reporting or causing to report by a person dealing in securities any information which is not true or which he does not believe to be true prior to or in the course of dealing in securities;
- (g) entering into a transaction in securities without intention of performing it or without intention of change of ownership of such security;

(h) selling, dealing or pledging of stolen or counterfeit security whether in physical or dematerialized form;

(i) an intermediary promising a certain price in respect of buying or selling of a security to a client and waiting till a discrepancy arises in the price of such security and retaining the difference in prices as profit for himself;

(j) an intermediary providing his clients with such information relating to a security as cannot be verified by the clients before their dealing in such security;

(k) an advertisement that is misleading or that contains information in a distorted manner and which may influence the decision of the investors;

(l) an intermediary reporting trading transactions to his clients entered into on their behalf in an inflated manner in order to increase his commission and brokerage;

(m) an intermediary not disclosing to his client transactions entered into on his behalf including taking an option position;

(n) circular transactions in respect of a security entered into between intermediaries in order to increase commission to provide a false appearance of trading in such security or to inflate, depress or cause fluctuations in the price of such security;

(o) encouraging the clients by an intermediary to deal in securities solely with the object of enhancing his brokerage or commission.

(p) an intermediary predating or otherwise falsifying records such as contract notes.

(q) an intermediary buying or selling securities in advance of a substantial client order or whereby a futures or option position is taken about an impending transaction in the same or related futures or options contract.

(r) planting false or misleading news which may induce sale or purchase of securities.

CHAPTER III INVESTIGATION

Power of the Board to order investigation

5. Where the Board, the Chairman, the member or the Executive Director (hereinafter referred to as "appointing authority") has reasonable ground to believe that -

- (a) the transactions in securities are being dealt with in a manner detrimental to the investors or the securities market in violation of these regulations;
- (b) any intermediary or any person associated with the securities market has violated any of the provisions of the Act or the rules or the regulations,

it may, at any time by order in writing, direct any officer not below the rank of Division Chief (hereinafter referred to as the "Investigating Authority") specified in the order to investigate the affairs of such intermediary or persons associated with the securities market or any other person and to report thereon to the Board in the manner provided in section 11C of the Act.

Powers of Investigating Authority

6. Without prejudice to the powers conferred under the Act, the Investigating Authority shall have the following powers for the conduct of investigation, namely:-

(1) to call for information or records from any person specified in section 11(2)(i) of the Act;

(2) to undertake inspection of any book, or register, or other document or record of any listed public company or a public company (not being intermediaries referred to in section 12 of the Act) which intends to get its securities listed on any recognized stock exchange where the Investigating Authority has reasonable grounds to believe that such company has been conducting in violation of these regulations;

(3) to require any intermediary or any person associated with securities market in any manner to furnish such information to, or produce such books, or registers, or other documents, or record before him or any person authorized by him in this behalf as he may consider necessary if the furnishing of such information or the production of such books, or

registers, or other documents, or record is relevant or necessary for the purposes of the investigation;

(4) to keep in his custody any books, registers, other documents and record produced under this regulation for a maximum period of one month which may be extended upto a period of six months by the Board:

Provided that the Investigating Authority may call for any book, register, other document or record if the same is needed again:

Provided further that if the person on whose behalf the books, registers, other documents and record are produced requires certified copies of the books, registers, other documents and record produced before the Investigating Authority, he shall give certified copies of such books, registers, other documents and record to such person or on whose behalf the books, registers, other documents and record were produced;

(5) to examine orally and to record the statement of the person concerned or any director, partner, member or employee of such person and to take notes of such oral examination to be used as an evidence against such person:

Provided that the said notes shall be read over to, or by, and signed by, the person so examined;

(6) to examine on oath any manager, managing director, officer or other employee of any intermediary or any person associated with securities market in any manner in relation to the affairs of his business and may administer an oath accordingly and for that purpose may require any of those persons to appear before him personally.

Power of the Investigating Authority to be exercised with prior approval

7. The Investigating Authority may, after obtaining specific approval from the Chairman or Member also exercise all or any of the following powers, namely:-

(a) to call for information and record from any bank or any other authority or board or corporation established or constituted by or under any Central, State or Provincial Act in respect of any transaction in securities which are under investigation;

(b) to make an application to the Judicial Magistrate of the first class having jurisdiction for an order for the seizure of any books, registers, other documents and record, if in the course of investigation, the Investigating Authority has reasonable ground to believe that such books, registers, other documents and record of, or relating to, any intermediary or any person associated with securities market in any manner may be destroyed, mutilated, altered, falsified or secreted;

(c) to keep in his custody the books, registers, other documents and record seized under these regulations for such period not later than the conclusion of the investigation as he considers necessary and thereafter to return the same to the person, the company or the other body corporate, or, as the case may be, to the managing director or the manager or any other person from whose custody or power they were seized:

Provided that the Investigating Authority may, before returning such books, registers, other documents and record as aforesaid, place identification marks on them or any part thereof ;

(d) Save as otherwise provided in this regulation, every search or seizure made under this regulation shall be carried out in accordance with the provisions of the Code of Criminal Procedure, 1973 (2 of 1974) relating to searches or seizures made under that Code.

Duty to co-operate, etc.

8. (1) It shall be the duty of every person in respect of whom an investigation has been ordered under regulation 7-

(a) to produce to the Investigating Authority or any person authorized by him such books, accounts and other documents and record in his custody or control and to furnish such statements and information as the Investigation Authority or the person so authorized

by him may reasonably require for the purposes of the investigation;

(b) to appear before the Investigation Authority personally when required to do so by him under regulation 6 or regulation 7 to answer any question which is put to him by the Investigation Authority in pursuance of the powers under the said regulations.

(2) Without prejudice to the provisions of sections 235 to 241 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), it shall be the duty of every manager, managing director, officer and other employee of the company and every intermediary referred to in section 12 of the Act or every person associated with the securities market to preserve and to produce to the Investigating Authority or any person authorized by him in this behalf, all the books, registers, other documents and record of, or relating to, the company or, as the case may be, of or relating to, the intermediary or such person, which are in their custody or power.

(3) Without prejudice to the generality of the provisions of sub-regulations (1) and (2), such person shall -

(a) allow the Investigating Authority to have access to the premises occupied by such person at all reasonable times for the purpose of investigation;

(b) extend to the Investigating Authority reasonable facilities for examining any books, accounts and other documents in his custody or control (whether kept

manually or in computer or in any other form) reasonably required for the purposes of the investigation;

(c) provide to such Investigating Authority any such books, accounts and records which, in the opinion of the Investigating Authority, are relevant to the investigation or, as the case may be, allow him to take out computer out-prints thereof.

Submission of report to the Board

9. The Investigating Authority shall, on completion of investigation, after taking into account all relevant facts, submit a report to the appointing authority:

Provided that the Investigating Authority may submit an interim report pending completion of investigations if he considers necessary in the interest of investors and the securities market or as directed by the appointing authority.

Enforcement by the Board

10. The Board may, after consideration of the report referred to in regulation 9, if satisfied that there is a violation of these regulations and after giving a reasonable opportunity of hearing to the persons concerned, issue such directions or take such action as mentioned in regulation 11 and regulation 12:

Provided that the Board may, in the interest of investors and the securities market, pending the receipt of the report of the

investigating authority referred to in regulation 9, issue directions under regulation 11:

Provided further that the Board may, in the interest of investors and securities market, dispense with the opportunity of pre-decisional hearing by recording reasons in writing and shall give an opportunity of post-decisional hearing to the persons concerned as expeditiously as possible.

11. (1) The Board may, without prejudice to the provisions contained in sub-sections (1), (2), (2A) and (3) of section 11 and section 11B of the Act, by an order, for reasons to be recorded in writing, in the interests of investors and securities market, issue or take any of the following actions or directions, either pending investigation or enquiry or on completion of such investigation or enquiry, namely:-
- (a) suspend the trading of the security found to be or *prima-facie* found to be involved in fraudulent and unfair trade practice in a recognized stock exchange;
 - (b) restrain persons from accessing the securities market and prohibit any person associated with securities market to buy, sell or deal in securities;
 - (c) suspend any office-bearer of any stock exchange or self-regulatory organization from holding such position;

- (d) impound and retain the proceeds or securities in respect of any transaction which is in violation or *prima facie* in violation of these regulations;
 - (e) direct any intermediary or any person associated with the securities market in any manner not to dispose of or alienate an asset forming part of a fraudulent and unfair transaction;
 - (f) require the person concerned to call upon any of its officers, other employees or representatives to refrain from dealing in securities in any particular manner;
 - (g) prohibit the person concerned from disposing of any of the securities acquired in contravention of these regulations;
 - (h) direct the person concerned to dispose of any such securities acquired in contravention of these regulations, in such manner as the Board may deem fit, for restoring the *status-quo ante*;
- (2) The Board shall issue a press release in respect of any final order passed under sub-regulation (1) in atleast two newspapers of which one shall have nationwide circulation and shall also put the order on the website of the Board.

Suspension or cancellation of registration

12. (1) The Board may, without prejudice to the provisions contained in sub-sections (1), (2), (2A) and (3) of section 11 and section 11B of the Act, by an order, for reasons to be recorded in writing, in the interests of investors and

securities market take the following action against an intermediary:

- (a) Issue a warning or censure
- (b) suspend the registration of the intermediary; or
- (c) cancel of the registration of the intermediary

Provided that no final order of suspension or cancellation of an intermediary for violation of these regulations shall be passed unless the procedure specified in the regulations applicable to such intermediary under the Securities and Exchange Board of India (Procedure for Holding Enquiry by Enquiry Officer and Imposing Penalty) Regulations, 2002 is complied with.

Repeal and savings

13. (1) The Securities and Exchange Board of India (Prohibition of Fraudulent and Unfair Trade Practices relating to Securities Market) Regulations, 1995 is hereby repealed.

(2) Notwithstanding repeal of the Securities and Exchange Board of India (Prohibition of Fraudulent and Unfair Trade Practices relating to Securities Market) Regulations, 1995, any violation of regulations 3, 4, 5 and 6 of the SEBI (Prohibition of Fraudulent and Unfair Trade Practices Relating to Securities Market) Regulations, 1995 shall be investigated and proceeded against in accordance with the procedure laid down in these regulations.

(3) Notwithstanding repeal of the Securities and Exchange Board of India (Prohibition of Fraudulent and Unfair Trade Practices relating to Securities Market) Regulations, 1995, any investigation pending, at the commencement of these regulations shall be continued and disposed of in accordance with the procedure laid down in these regulations.

[F.No. SEBI/LGL/13678/2003]
G. N. BAJPAI, Chairman

Footnote

1. The Securities and Exchange Board of India (Prohibition of Fraudulent and Unfair Trade Practices Relating to securities Market) Regulations, 1995, was published in the Gazette of India on 25th October, 1995 vide S.O/LE/856(E)